Shri Brahma Dev Mantra Sadhana

ब्रह्मदेव मंत्र साधना एवं सिद्धि

Shri Raj Verma ji
Contact- 09897507933, 07500292413

GURUDEV RAJ VERMA

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

ब्रह्माजी सृष्टि के रचियता कहे जाते हैं। सतयुग में ब्रह्मदेव की तपस्या के द्वारा तपस्वी अनेंको वरदान एवं दुर्लभ सिद्धियां प्राप्त करते थे। पुष्कर तीर्थ में ब्रह्मदेव की उपासना मुख्य रूप से की जाती है। महानिर्वाणतंत्र में स्वयं शिव ने पार्वती से ब्रह्मदेव मंत्र की प्रशंसा करते हुए कहा है कि यह मंत्र सभी मंत्रों में सर्वश्रेष्ठ है। इस मंत्र के द्वारा मानव धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष की प्राप्ति सहजता से कर सकता है। इस मंत्र में सिद्धि–असिद्धि चक्र का विचार नही किया जाता है। अरि–मित्रादि दोषों से पूर्णता मुक्त है।

इस पावन मंत्र को ग्रहण करने के लिये तिथि, नक्षत्र, राशि, वार, कुलाकुल आदि का विचार भी नहीं किया जाता। इस मंत्र में दस प्रमुख सस्कारों के विधान की भी आवश्कता नहीं पड़ती। परम्पिता ब्रह्मोपसना में न आवाहन की आवश्यकता है न विसर्जन की। किसी भी समय किसी भी स्थान में इनकी उपासना की जा सकती है। स्नान किये या बिना स्नान किये, कुछ खाये या बिना खाये, किसी भी अवस्था में चित्तशुद्ध करके इनकीं पूजा की जा सकती है। ब्रह्मोपासक के समक्ष आते ही ग्रह, वेताल, चेटक, पिशाच, भूत, डाकिनी, शाकिनी, मातृकादि पलायन कर जाते हैं। ब्रह्ममंत्र से रक्षित मानव संसार के सभी भयों से मुक्त होकर राजा की तरह विचरण करता हुआ चिरकाल तक समस्त सुखों का भोग करता है। सकाम साधना करने वाले मनुष्य प्रणव के स्थान पर ऐं, ह्रीं, श्रीं, क्लीं या अन्य बीज लगाकर अपनी समस्त कामनाओं की शीघ्र ही पूर्ति कर सकते हैं। शाक्त हो या शैव, वैष्णव हो या गाणपत्य, किसी भी देवी–देवता का उपासक, ब्राह्मण हो या किसी अन्य जाति का हो, सभी प्रकार के मनुष्य ब्रह्ममंत्र के अधिकारी होते हैं।

विनियोग- ॐ अस्य श्री परब्रह्ममंत्र, सदाशिव ऋषिः, अनुष्टुप् छंदः, निर्गुण सर्वान्तर्यामी परम्ब्रह्मदेवता, चतुर्वर्गफल सिद्ध्यर्थे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- सदाशिवाय ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छंदसे नमः मुखे। सर्वान्तर्यामी निर्गुण परमब्रह्मणे देवतायै नमः हृदि। धर्मार्थकाममोक्षावाप्तये विनियोगः सर्वांगे।

करन्यास- ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। सत् तर्जनीभ्यां स्वाहा। चित् मध्यमाभ्यां वषट्। एकं अनामिकाभ्यां हुं। ब्रह्म कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ सच्चिदेकं ब्रह्म करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

हृदयादिन्यास- ॐ हृदयाय नमः। सत् शिर से स्वाहा। चित् शिखायै वषट्। एकं कवचाय हुं। ब्रह्म नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ सच्चिदेकं ब्रह्म अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- हृदयकमलमध्ये निर्विशेषं निरीहं, हरिहरविधिवेद्यं योगिभिर्ध्यानगम्यम्। जननमरणभीति भ्रंशि सच्चित्स्वरूपं, सकलभुवनबीजं ब्रह्म चैतन्यमीडे।।

मंत्र- 'ॐ सच्चिदेकं ब्रह्म।'

परब्रह्म गायत्री- 'ॐ परमेश्वराय विद्महे परतत्त्वाय धीमहि तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात्।'

विधि- ब्रह्ममंत्र का पुरश्चरण बत्तीस हजार जप का है। जपोपरान्त् विधिपूर्वक दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन तथा मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन करवाना चाहिये। ब्रह्ममंत्र का पुरश्चरण करते समय भक्ष्याभक्ष्य का विचार नही किया जाता है। काल शुद्धि तथा स्थान परिवर्तन का कोई नियम नहीं है। मुद्रा प्रदर्शित करना या ना करना, उपवास करके या बिना उपवास के, स्नान करके या बिना नहाये, स्वेच्छानुसार इस अमोघ मंत्र की साधना करें। इस महामंत्र की साधना में चौरगणेशादि के मंत्र के जप की तथा कुल्लुका विन्यास की भी आवश्यकता नहीं होती। भक्तिपूर्वक जप करने से अल्पकाल में निश्चय ही परब्रह्म का साक्षात्कार लाभ होता है। गायत्री मंत्र उत्तम है, जो पूर्णिमा में उपवास करके गायत्री के अक्षरतत्त्वों द्वारा ब्रह्माजी की पूजा करता है, वह परम पद को प्राप्त होता है। जो कार्तिक की अमावस्या को ब्रह्माजी के मन्दिर में दीप जलाता है, वह परम पद को प्राप्त करता है। जितेन्द्रिय होकर गंगातट, शिवालय, पुष्कर तीर्थ, पर्वत, गुफा या निर्जन वन में गुरु से दीक्षा प्राप्त कर ब्रह्मदेव की उपासना आरम्भ करें।

श्रीब्रह्मास्त्र मंत्र- 'ॐ नमो ब्रह्माय नमः। स्मरण मात्रेण प्रकटय प्रकटय, शीघ्रं आगच्छ आगच्छ, मम सर्वशत्रुं नाशय नाशय, शत्रु सैन्यं नाशय नाशय, घातय घातय, मारय मारय हुं फट्।'

ब्रह्मास्त्र अत्यन्त घातक एवं गुप्त मंत्र है। अतः इस अस्त्र का अधिकारी एक उच्च साधक ही हो सकता है। मूल मंत्र के विशेष संख्या में मंत्र सिद्ध कर लेने के पश्चात् एवं अति अनिवार्यता में ही ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करना चाहिये। समर्थ गुरु की आज्ञा एवं संरक्षण अनिवार्य है।

श्रीब्रह्मदेव कवचम्- कवचं शृणु चार्वंगि जगन्मंगलनामकम्। पठनाद्धारणाद्यस्य ब्रह्मज्ञयो जायते ध्रुवम्।।

परमात्मा शिरः पातु हृदयं परमेश्वरः। कण्ठं पातु जगत्पाता वदनं सर्वदृग्विभुः।।

करौ मे पातु विश्वात्मा पादौ रक्षतु चिन्मयः। सर्वांगं सर्वदा पातु परं ब्रह्म सनातनम्।।

श्रीजगन्मंगलस्यास्य कवचस्य सदाशिवः। ऋषिश्छन्दोऽनुष्टुबिति परमब्रह्मदेवता।।

चतुर्वर्गफलावाप्त्यै विनियोगः प्रकीर्त्तितः। यः पठेद्ब्रह्मकवचमृषि न्यासपुरःसरम्।।

स ब्रह्मज्ञानमासाद्य साक्षाद्ब्रह्ममयो भवेत्। भूर्जे विलिख्य गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि।।

कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ सर्वसिद्धिश्वरो भवेत्। इत्येतत्परमब्रह्मकवचं ते प्रकाशितम्।।

दद्यात्प्रियाय शिष्याय गुरुभक्ताय धीमते। पठित्वा स्तोत्रकवचं प्रणमेत्साधकाग्रणीः।।

ॐ नमस्ते परमं ब्रह्म नमस्ते परमात्मने। निर्गुणाय नमुस्तभ्यं सद्रूपाय नमो नमः।।

इस श्रेष्ठ कवच का नित्य भक्तिपूर्वक पाठ करने वाले मनुष्य की ब्रह्मदेव सदैव सर्व विघ्नो से रक्षा करते है तथा मनुष्य ब्रह्मज्ञान का अधिकारी होता है।

श्रीब्रह्मदेव स्तोत्रम्- स्तोत्रं शृणु महेशानि ब्रह्मणः परमात्मनः। यच्छ्रुत्वा साधको देवि ब्रह्मसायुज्यमश्नुते।।

ॐ नमस्ते सते सर्वलोकाश्रयाय, नमस्ते चिते विश्वरूपात्मकाय। नमोऽद्वैततत्त्वाय मुक्तिप्रदाय, नमो ब्रह्मणे व्यापिने निर्गुणाय।।

त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं, त्वमेकं जगत्कारणं विश्वरूपम्। त्वमेकं जगत्कर्तृपातृप्रहर्तृ, त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम्।।

भयानां भयं भीषणं भीषणानां, गतिः प्राणिनां पावनं पावनानाम्। महोच्चैःपदानां नियन्तृत्वमेकं, परेषां परं रक्षकं रक्षकाणाम्।।

परेश प्रभो सर्वरूपाप्रकाशिन्ननिर्देश्य, सर्वेन्द्रियागम्य सत्य। अचिन्त्याक्षर व्यापकाव्यक्ततत्त्व, जगद्भासकाधीश पायादपायात्।।

तदेकं स्मरामस्तदेकं जपामस्तदेकं जगत्साक्षिरूपं नमामः। सदेकं निधानं निरालम्बमीशं, भवाम्भोधिपोतं शरण्यं व्रजामः।।

पंचरत्नमिदं स्तोत्रं ब्रह्मणः परमात्मनः। यः पठेत्प्रयतो भूत्वा ब्रह्मसायुज्यमाप्नुयात्।।
प्रदोषेऽदः पठेन्नित्यं सोमवारे विशेषतः। श्रावयेद्बोधयेत्प्राज्ञो ब्रह्मनिष्ठान्स्वबान्धवान्।।इति ते कथितं देवि पंचरत्नं महेशितुः।

परब्रह्म के पंचरत्न नामक स्तोत्र का जो भक्तिपूर्वक पाठ करता है, वह ब्रह्मसायुज्य को प्राप्त करता है। प्रतिदिन प्रदोष काल में इस श्रेष्ठ स्तोत्र का पाठ करना चाहिये। विशेषतः सोमवार को ज्ञानी

व्यक्ति अपने ब्रह्मनिष्ठ बान्धवों को इस स्तोत्र को सुनाये व समझाये।

श्रीब्रह्मदेव अष्टोऽत्तर शतनाम- पूर्वकाल में भगवान् विष्णु ने पूछा- 'देवदेव पितामह! आप किन-किन स्थानों में किस-किस नाम से निवास करते हैं? यह स्मरण करके बताइये।'

ब्रह्माजी ने कहा- मैं पुष्कर में सुरश्रेष्ठ, गया में प्रपितामह, कान्यकुब्ज में वेदगर्भ, भृगुकच्छ में चतुर्मुख, कौबेरी में सृष्टिकर्ता, नन्दिपुरी में बृहस्पति, प्रभास में बालरूपी, वाराणसी में सुरप्रिय, द्वारावती में चक्रदेव, वैदिश में भुवनाधिप, पौण्ड्रक में पुण्डरीकाक्ष, हस्तिनापुर में पीताक्ष, जयन्ती में विजय, पुरुषोत्तम में जयन्त, वाड में पद्महस्त, तमोलिप्त में तमोनुद, आहिच्छत्री में जनानन्द, कांचीपुरी में जनप्रिय, कर्णाटक में ब्रह्मा, ऋषिकुण्ड में मुनि, श्रीकण्ठ में श्रीनिवास, कामरूप में शुभंकर, उड्डीयान में देवकर्ता, जालन्धर में स्रष्टा, मल्लिका में विष्णु, महेन्द्रपर्वत पर भार्गव, गोमद में स्थविराकार, उज्जयिनि में पितामह, कौशाम्बी में महादेव, अयोध्या में राघव, चित्रकूट में विरंचि, विन्ध्याचल में वाराह, हरिद्वार में सुरश्रेष्ठ, हिमवान् पर्वत पर शंकर, देहिका में स्रचाहस्त, अर्बुद में पद्महस्त, वृन्दावन में पद्मनेत्र, नैमिषारण्य में कुशहस्त,

गोपक्षेत्र में गोविन्द, यमुनातट पर सुरेन्द्र, भागीरथी में पद्मतनु, जनस्थल में जनानन्द, कोंकण में मध्वक्ष, काम्पिल्य में कनकप्रभ, खेटक में अन्नदाता, क्रतुस्थल में शम्भु, लंका में पौलस्त्य, काश्मीर में हंसवाहन, अर्बुद में वसिष्ठ, उत्पलावन में नारद, मेधक में श्रुतिदाता, प्रयाग में यजुष्पति, शिवलिंग में सामवेद, मार्कण्डस्थान में मधुप्रिय, गोमन्त में नारायण, विदर्भा में द्विजप्रिय, अंकुलक में ब्रह्मगर्भ, ब्रह्मवाह में सुतप्रिय, इन्द्रप्रस्थ में दुराधर्ष, पम्पा में सुदर्शन, विरजा में महारूप, राष्ट्रवर्धन में सुरूप, कदम्बक में जनाध्यक्ष, समस्थल में देवाध्यक्ष, रुद्रपीठ में गंगाधर, सुपीठ में जलद, त्र्यम्बक में त्रिपुरारि, श्रीशैल में त्रिलोचन, प्लक्षपुर में महादेव, कपाल में वेधनाशन, श्रृंगवेरपुर में शौरि, निमिषक्षेत्र में चक्रधारक, नन्दिपुरी में विरूपाक्ष, प्लक्षपाद में गौतम, हस्तिनाथ में माल्यवान, वाचिक में द्विजेन्द्र, इन्द्रपुरी में दिवानाथ, भूतिका में पुरन्दर, चन्द्रा में हंसबाहु, चम्पा में गरुडप्रिय, महोदय में महायक्ष, पूतक वन में सुयज्ञ, सिद्धेश्वर में शुक्लवर्ण, विभा में पद्मबोधक, देवदारुवन में लिंगी, उदक में उमापति, मातृस्थान में विनायक, अलका में धनाधिप, त्रिकूट में गोविन्द, पाताल में वासुकि, कोविदार में युगाध्यक्ष, स्त्रीराज्य में सुरप्रिय, पूर्णगिरि में सुभोग, शाल्मलि में तक्षक, अमर में पापहा, अम्बिका में सुदर्शन, नरवापी

में महावीर, कान्तार में दुर्गनाशन, पद्मावती में पद्मगृह तथा गगन में मृगलांछन नाम से रहता हूं।

हे मधुसूदन! जो प्रभास में इन नामों द्वारा मेरा स्तवन करता है, वह मेरे धाम को पाकर आनन्द भोगता है। मेरे इस स्तोत्र पाठ से या श्रवण से मानसिक, वाचिक और शारीरिक सभी पाप छूट जाते हैं। कार्तिक की पूर्णिमा को जब कृत्तिका नक्षत्र हो, तब प्रभास क्षेत्र में वह तिथि मुझे बहुत प्रिय है और यदि उसी तिथि में रोहिणी नक्षत्र आ जाये तो वह पुण्यमयी महाकार्तिकी कहलाती है, जो देवताओं के लिये भी दुर्लभ है। शनैश्चर, रविवार अथवा बृहस्पतिवार तथा कृत्तिका नक्षत्र के योग से युक्त यदि कार्तिक मास की पूर्णिमा हो तो उसमें बालरूपी ब्रह्माजी का दर्शन करके मनुष्य अश्वमेध यज्ञ का फल पाता है। विशाखा नक्षत्र के सूर्य और कृत्तिका नक्षत्र के चन्द्रमा हों तो वह पद्मकयोग प्रभासक्षेत्र में दुर्लभ है। करोड़ों पापों से युक्त मनुष्य भी उक्त योग में प्रभासक्षेत्र के भीतर यदि बालरूपधारी ब्रह्माजी का दर्शन कर ले तो उसे यमलोक नहीं देखना पड़ता।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

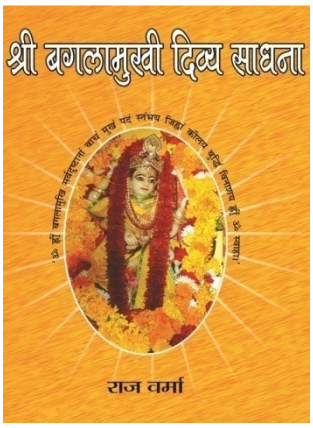

Shri Raj Verma ji
Contact- 09897507933, 07500292413